

Let Your Light So Shine Before Men

दीपक

तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये
उजियाला है। भजन संहिता 119:105

उत्साह (Enthusiasm)

“बहुत वर्षों तक जीवित रहने से कोई बूढ़ा नहीं होता है। व्यक्ति अपने आदर्शों को छोड़ देने से बूढ़ा होता है। बहुत वर्षों तक जीवित रहने से त्वचा में झुर्रियां पड़ती हैं, लेकिन यदि उत्साह नहीं तो आत्मा में झुर्रियां पड़ जाती हैं।” ये पंक्तिया जनरल डगलस मैकआरथर की मेज पर रखी पट्टिका से ली गयी है। किसी अन्य व्यक्ति ने कहा है कि यदि उत्साह नहीं तो आत्मा भी नहीं।

इन्थ्यूजिएजम (उत्साह) शब्द की उत्पत्ति की खोज करना बहुत रुचिकर है इन्थ्यूजिएजम शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा में परमेश्वर के लिए प्रयोग होने वाले शब्द, ‘थिओस’ (theos) से हुयी। इसका शब्दिक अर्थ एन थिओस (en theos) अर्थात परमेश्वर को अपने अन्दर रखना है इसलिए यह कहना बिल्कुल सही है कि जिन लोगों में उत्साह (enthusiasm) नहीं अर्थात जो अपने भीतर परमेश्वर को नहीं रखते, वे आत्मा रहित हैं।

इस बात पर विचार करें कि हमें किस बात के लिए उत्साहित रहना है। हम सच्चाई को जानते हैं। परमेश्वर ने हमें अपनी ऊँची और पवित्र बुलाहट से बुलाया है। हम परमेश्वर के शाही परिवार के सदस्य हो गये हैं, यीशु मसीह अब हमारे बड़े भाई हैं, हमारा सम्बन्ध अब्राहम से हो गया है और हम उन सभी प्रतिज्ञाओं के वारिस हो गये हैं जो परमेश्वर ने अब्राहम से की थी। इस संसार में कोई भी हमसे अधिक अच्छा नहीं है। और अब भी हम यदि

उत्साहित (enthusiastic) नहीं है तो यह बड़े शर्म की बात है। हमारे समान दूसरे लोगों के पास प्रसन्न रहने की ऐसी वजह नहीं है। यदि किसी व्यक्ति को एक करोड़ रुपया मिल जाये तो निश्चय ही वह उत्साहित होगा लेकिन हमारे पास उत्साहित होने का इससे कहीं बड़ा कारण है, क्योंकि इस रुपये को वह मृत्यु के समय अपने साथ नहीं ले जा सकता और कुछ सालों बाद इसे किसी दूसरे के लिए छोड़ कर चला जायेगा। इस संसार की धन सम्पत्ति हमारे हाथ में होने पर भी एक दिन चली जाती है लेकिन परमेश्वर की प्रतिज्ञायें ऐसी नहीं हैं। परमेश्वर ने हमसे “घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और लड़के-बालों और खेतों को पर उपद्रव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन” देने की प्रतिज्ञायें की हैं।

दाऊद एक उत्साहित व्यक्ति था। परमेश्वर के सन्दूक के सामने मग्न होकर नाचने के द्वारा, हम उसके उत्साह की कल्पना कर सकते हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि दाऊद को, सम्पूर्ण मन से परमेश्वर के पीछे चलने वाला व्यक्ति कहा गया है। परमेश्वर निश्चय ही हमें उत्साहित रखेगा। परमेश्वर कहता है, “इसलिए जो मैं उत्पन्न करने पर हूँ, उसके कारण तुम हर्षित हो, और सदा सर्वदा मग्न रहे; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मग्न और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊंगा।”

जब हमारे आसपास कोई उत्साहित व्यक्ति होता है तो हम आनन्दित होते हैं। परमेश्वर अय्यूब को सृष्टि का वर्णन करते हुए कहता है कि, “जब कि भोर के तारे एक संग आनन्द से गाते थे और परमेश्वर के सब पुत्र जय जयकार करते थे?” जब परमेश्वर का पुत्र पैदा हुआ तो स्वर्गदूतों ने उत्साहपूर्वक चरवाहों को यह घोषणा की कि, “देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ।”

परमेश्वर ने जो हमें अपनी पवित्र पुस्तक के द्वारा बड़े आनन्द का सुसमाचार दिया है, उसके प्रति हमारी क्या प्रतिक्रिया है? क्या इस सुसमाचार के द्वारा हम उत्साहित हैं? क्या हम अपनी ऊँची और पवित्र बुलाहट से उत्तेजित हैं? दाऊद ने भी कहा कि, “फिर क्या तुम्हारी दृष्टि में राजा का दामाद होना छोटी बात है?” एक राजा के भाई और बहन होने पर हम उत्साहित न हो ऐसा असम्भव है।

ऐसा कहा गया है कि यदि सभी नियन्त्रण खो दे और आप अपने पर नियन्त्रण रख सके तो ऐसी परिस्थिति में आपके लिए समझ पाना कठिन होता है कि क्या हो रहा है। जिस ऊँची बुलाहट से हमें बुलाया गया है यदि हम उसके विषय में शान्त

और अभावुक रहते हैं तो शायद हम इस ऊँची बुलाहट के अर्थ को नहीं समझते हैं।

“हे धर्मियों यहोवा के कारण आनन्दित और मगन हो, और हे सब सीधे मन वालों आनन्द से जयजयकार करो।” उत्साहित (Enthusiastic) रहने से हम जवान रहते हैं और जो लोग परमेश्वर को अपने अन्दर (en theos) रखते हैं वे सदा सर्वदा के लिए जवान रहेंगे क्योंकि “उनकी चमक आकाशमण्डल की सी होगी और वे सर्वदा तारों की नाई प्रकाशमान रहेंगे।”

‘उत्साह’ (Enthusiasm) is taken from ‘Minute Meditations’ by Robert J. Lloyd

प्रेम का नियम (The Law of Love)

“प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता, कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं।”
(1 कुरिन्थियों 13:4-8)

मुख्य पद: लैव्यव्यवस्था 19:1-18

प्रेम का नियम सुसमाचार के सन्देश और एक विश्वासी के जीवन का आधार है। बिना प्रेम के आशा नहीं। वास्तव में, परमेश्वर के प्रेम का सन्देश ही दया का सन्देश है। यदि हम बाईबल से क्षमा, धैर्य, दया, उदारता और कृपा के उदाहरणों को निकाल दे तो बाईबल में अधिकांश कोरे पन्ने होंगे। कभी-कभी परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार करना सरल नहीं होता और न ही स्वयं उस प्रेम को दर्शाना सरल है। लेकिन यदि हम उद्धार पाने के लिए उत्सुक हैं तो हमें परमेश्वर से और अपने पड़ोसी से, अपने सम्पूर्ण मन से प्रेम करना चाहिए।

- 1- (a) ये पद आपको क्या स्मरण दिलाते हैं?
- (b) इन नियमों का सारांश आप कैसे देंगे?

- 2- क्या आज भी आपको इन नियमों का पालन करना चाहिये? पद 13 पर विचार कीजिए।
- 3- व्यवस्थाविवरण 5:6-21 को पढ़िए। इन पदों में मुख्य अन्तर क्या है?
- 4- मत्ति 22:36-40 और यूहन्ना 13:34 को पढ़िये। प्रभु यीशु मसीह ने ऐसा क्यों कहा कि यह एक नयी आज्ञा है?
- 5- किस परिस्थिति में, अपने पड़ोसी से प्रेम करना आपके लिए मुश्किल होता है? कुछ उदाहरण दीजिए।

सबसे बड़ी आज्ञा

“तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।” (मत्ति 22:37-39)

कल्पना कीजिए यदि इन पदों को निम्न प्रकार पढा जाये:

“तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ घृणा रख। यद्यपि तेरे सृष्टिकृता ने तूझे बनाया है और तूझको सब कुछ दिया है यहां तक कि अपना बेटा भी दे दिया, लेकिन तू स्वार्थी हो जा, उसको अयोग्य जान, उसको त्याग दे, उसकी अनदेखी कर, पाप कर, दूसरे झूठे देवताओं के पीछे चल। बड़ी और मुख्य आज्ञा यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से घृणा कर और अपने आप से प्रेम रख, क्योंकि यदि तू ऐसा नहीं करेगा तो तेरा पड़ोसी तूझ से लाभ उठाएगा और जब तू कमजोर होगा तो तूझे कष्ट होगा। हो सकता है कि सबसे ताकतवर जीते।”

यह शर्मनाक है। लेकिन क्या ऐसा ही होता है?

बड़े दुख की बात है कि बहुत से लोग प्रेम के इस नियम की अनदेखी कर रहे हैं, जो प्रेम करने वाले परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण समर्पण है। अविश्वासी लोग इसे हंसी में उड़ाते हैं। और वे सोचते हैं कि केवल कमजोर लोग ही इस प्रेम के नियम का अनुसरण करते हैं।

सर्वप्रथम परमेश्वर से प्रेम

यदि हम परमेश्वर की असीम दया और प्रेम को ग्रहण करते हैं तो ही हम स्वाभाविक रूप से दूसरों के प्रति दया और प्रेम प्रकट कर सकते हैं। अन्यथा हमारा धर्म झूठा है।

“हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पायें। प्रेम इसमें नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इसमें है कि उसने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा। हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।” (1 यूहन्ना 4:7-11)

परमेश्वर ने हम पर अपना प्रेम उडेल दिया यद्यपि हम उसके प्रेम के योग्य नहीं हैं। ठीक वैसे ही हमें भी दूसरों पर अपना प्रेम उडेलना चाहिए चाहे वे उसके योग्य हो या नहीं। पौलुस ने मसीह के प्रेम से नम्र होकर कहा कि, “मसीह यीशु में न खतना, न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है।” (गलतियों 5:6)

याद रखें:

- प्रेम विकल्पीय नहीं है- यह मसीह जीवन के लिए एक आवश्यक और सच्ची आज्ञा है। (यूहन्ना 13:34)
- प्रेम एक अनियन्त्रित भावना नहीं है- यह एक चुनाव है। (1 कुरिन्थियों 14:1)
- प्रेम केवल एक एहसास नहीं है- यह हमारी क्रिया के द्वारा प्रकट होता है। (1 यूहन्ना 3:18)

जैसे पौलुस ने कहा:

“और प्रभु ऐसा करे, कि जैसा हम तुम से प्रेम रखते हैं; वैसा ही तुम्हारा प्रेम भी आपस में, और सब मनुष्यों के साथ बढे, और उन्नति करता जाए।” (1 थिस्सलुनीकियों 3:12)

सारांश

प्रभु यीशु मसीह हमारे लिए इस जगत में आये और हमारे ही लिए मरे क्योंकि उन्होंने हमसे सच्चा प्रेम किया। यदि हम अपने पाप को और क्षमा की आवश्यकता को समझ जाते हैं तो हम प्रभु यीशु मसीह को अपना आदर्श मान लेंगे और दूसरो के प्रेम के लिए अपना जीवन दे देंगे।

प्रेम के शब्द

यूनानी भाषा में प्रेम के लिए कम से कम चार शब्द हैं।

इरोस (Eros): यह शब्द मुख्य रूप से पुरुष और स्त्री के बीच के प्रेम के लिए प्रयोग होता है। यह लैंगिक प्रेम है। नये नियम में इस शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है।

स्टोर्ज (Storgé): यह शब्द पारिवारिक स्नेह के लिए प्रयोग होता है। जैसे माता पिता का बच्चों के प्रति और बच्चों का माता पिता के प्रति प्रेम। यद्यपि नये नियम में यह शब्द नहीं है, रोमियों 12:10 में इससे सम्बन्धित शब्द है “भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर मया रखो” यह पद बताता है कि मसीह के पीछे चलने वालो को एक दूसरे से परिवार के सदस्यों के समान व्यवहार करना चाहिए।

फिलिया (Philia): इसका अर्थ है कि किसी को स्नेहपूर्वक देखना। यह मित्रता का प्रेम है। उदाहरण के लिए देखें तो यह लाजर के लिए प्रभु यीशु मसीह की प्रीति के लिए प्रयोग हुआ। (यूहन्ना 11:3,36) हमें दूसरे विश्वासियों के साथ इसी प्रकार की प्रीति रखनी चाहिए (रोमियों 12:10, इब्रानियों 13:1; 2 पतरस 1:7)

अगापे (Agapé): हमें दूसरो के साथ कैसा प्रेम रखना चाहिए इसके लिए नये नियम में अधिकांशतः यही शब्द प्रयोग हुआ है। इसमें *फिलिया* की गर्मजोशी नहीं है और इसमें महसूस होने वाली भावनाओ के बजाय एक चुनाव है। *अगापे* वो प्रेम है जो क्रिया के द्वारा होता है। इस प्रेम में दूसरो के प्रति दयालुता होती है और यह नहीं देखा जाता कि उनका हमारे प्रति कैसा व्यवहार है। यह दूसरो को प्राथमिकता देने वाला एकतरफा प्रेम है। हमें इसी प्रकार का प्रेम रखने के लिए कहा गया है (1 पतरस 1:22; 1 यूहन्ना 3:11)। हमें अपने शत्रुओं से भी इसी प्रकार प्रेम करना चाहिए (मत्ति 5:44)। *अगापे* प्रेम एक सच्चे विश्वासी की पहचान है (यूहन्ना 13:34-35)।

कुछ सम्बन्धित पद

परमेश्वर का हमसे प्रेम: निर्गमन 34:6; गिनती 14:18; व्यवस्थाविवरण 7:8-12; भजन 23:6, 103:8-13, 107, 136; होशे 1:6-7; यूहन्ना 3:16, 16:27; रोमियों 5:5-8, 8:39; इफिसियों 3:17-19; 1 यूहन्ना 3:1,16।

परमेश्वर से प्रेम रखो: व्यवस्थाविवरण 6:5, 10:12, 11:1,13,22, 13:3, 30:16,20; यहोशू 22:5, 23:11; होशे 12:6; मत्ति 22:37-38; मरकुस 12:30; 1 कुरिन्थियों 8:3; 1 यूहन्ना 5:3।

दूसरो से प्रेम रखो: लैव्य 19:18,34; मत्ति 22:39; मरकुस 12:31; यूहन्ना 13:34-35, 15:12; 1 कुरिन्थियों 13; गलतियों 5:22; इफिसियों 5:2; 1 थिस्सलुनीकियों 3:12, 4:9-10; 1 तीमुथियुस 1:5; इब्रानियों 13:1; 1 पतरस 1:22, 4:8; 2 पतरस 1:7; 1 यूहन्ना 3:14-18,23, 4:7-5:3; 2 यूहन्ना 5-6।

शत्रुओं से प्रेम रखो: निर्गमन 23:4-5; नीतिवचन 25:21-22; मत्ति 5:38-48; लूका 6:27-35; रोमियों 12:14-21; 1 पतरस 3:9।

विचारणीय पद

- 1- क्या हम हमेशा स्वेच्छा से प्रेम करते हैं, या हम किसी से इसलिए प्रेम करते हैं कि हमें ऐसा करने की आज्ञा दी गयी है? क्या यह सम्भव है कि हम जिसे पसन्द नहीं करते उससे प्रेम करें?
- 2- क्या परमेश्वर से प्रेम करना आपके लिए कठिन है? व्याख्या कीजिए।
 - (अ) क्या आपके जीवन में कभी ऐसा समय आया कि आप परमेश्वर पर क्रोधित हुए? क्या ऐसा करना गलत है? योना और अय्यूब के अनुभवों पर विचार कीजिए।
 - (ब) क्या आपने कभी परमेश्वर के प्रेम को अस्वीकार किया है?
 - (स) क्या आपने कभी अपने आप को परमेश्वर के द्वारा त्यागा हुआ महसूस किया है? यह गलत क्यों है?
 - (द) क्या आपने कभी अपने को परमेश्वर के प्रेम के अयोग्य महसूस किया है?

(ड) इन अनुभवों से आपने अपने और परमेश्वर के विषय में क्या सीखा?

3- प्रेम को विभिन्न प्रकार से प्रकट किया जाता है। निम्न क्रियाओं पर विचार कीजिए। इन क्रियाओं के द्वारा प्रेम किस प्रकार प्रकट होता है। इनमें से कौन सा कार्य करना आपके लिए कठिन है?

- क्षमा मत्ति 6:14-15
- सुधारना/दण्ड देना लूका 17:3-6
- प्रार्थना इफिसियों 6:18-19
- पहनाई रोमियों 12:13
- माता पिता का आदर व्यवस्थाविवरण 5:16
- शिक्षा देना कुलुस्सियों 3:16
- मेल कराना मत्ति 5:9
- त्याग मत्ति 19:29

4- दुष्ट दास के दृष्टान्त को पढ़िए (मत्ति 18:21-35)

(अ) यहां प्रभु यीशु मसीह क्या शिक्षा दे रहे हैं?

(ब) पहला दास राजा का दस हजार तोड़े का ऋणी था। वास्तव में, क्या यह दास कभी ऋण चुकाने की स्थिति में था?

(द) यह कहानी परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध को किस प्रकार दर्शाती है?

(स) क्या दया दिखाना विकल्पीय है?

‘प्रेम का नियम’ (The Law of Love) is from ‘The Way of Life’ by Rob J. Hyndman

कृपया निःशुल्क हिन्दी पुस्तिका “परमेश्वर हमारा पिता” और हिन्दी बाईबल पत्राचार पाठ्यक्रम हेतु हमारे निम्न पते पर सम्पर्क करें --

दि क्रिस्टडेलफियन

पो. बा. न. – 10, मुजफ्फरनगर (यूपी) – 251002

ई-मेल - cdelph_mzn@yahoo.in

केवल व्यक्तिगत वितरण हेतु